१२. लोकगीत

(आकलन)

१. (अ) उत्तर लिखिए :
(१) मन को प्रसन्न करने वाले - बादल।

(२) धरती को नहलाने वाले - मेघा।

(आ) परिवर्तन लिखिए :-
वसंत ऋतु से आया → बाग-बगीचों में - बाग-बगीचे हरे-भरे हो गए हैं।
वसंत ऋतु से आया → खेतों में - खेत और वन सब हरे-भरे हो गए हैं।

(शब्द संपदा)

२. उचित जोड़ियाँ मिलाइए :-

'अ'	'उत्तर :'
(१) तालाब -	सर
(२) नदी -	सरिता
(३) बयार -	हवा
(४) भौंरा-	भ्रमर

(अभिव्यक्ति)

(अ) ३. 'सावन बड़ा मनभावन', इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
उत्तर : सावन मास का नाम आते ही मन में ढेर सारी उमंगें हिलोरें मारने लगती हैं। सावन के महीने का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्त्व है। कजरारी काली घटाएँ, उमड़ते-घुमड़ते, मदमाते बादल, रिमझिम फुहारें, भीना-भीना मौसम सावन शब्द अपने आप में मनभावन है। आषाढ़ की तपती-झुलसाती गरमी के बाद सावन की ठंडी फुहार तन व मन को प्रफुल्लता प्रदान करने के साथ वातावरण को भी सुरम्यता प्रदान करती हैं। मुरझाई, कुम्हलाई धरा सावन की ठंडी फुहारों में भीग हरियाणा की सुंदर चूनर ओढ़ स्वयं को बड़े मनमोहक अंदाज में सजा लेती है। सावन प्रकृति को तो सराबोर करता ही है, साथ ही मानव मन में भी उल्लास और उमंग भर देता है। प्रकृति खिलखिलाती है, तो मनमयूर झूम उठता है।

(आ) 'वसंत के आगमन पर प्रकृति खिल उठती है', इस तथ्य को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर : भारत में बसंत ऋतु को सबसे सुंदर और आकर्षक मौसम माना जाता है। बसंत के आगमन पर प्रकृति खिल उठती है। पेड़ों की शाखाओं पर नए, हरे-गुलाबी पत्ते आ जाते हैं। दिशाओं में रंग-बिरंगे सुगंधित पुष्प दृष्टिगोचर होते हैं। उन पर मँडराती सुंदर तितलियाँ सबका मन मोह लेती हैं। हर तरफ हरियाली का साम्राज्य दिखाई पड़ता है। सरदियों की लंबी खामोशी के बाद पक्षी मधुर आवाज में पेड़ों की शाखाओं पर नाचना और गाना शुरू कर देते हैं। मानो वसंत का स्वागत कर रहे हों। इस मौसम में न अधिक सरदी होती है और न ही अधिक गरमी। आकाश बिलकुल साफ दिखाई देता है। खेतों में फसलें पकने लगती हैं। सभी के हृदय आनंद से परिपूर्ण होते हैं।
(रसास्वादन)

४. 'बसंत और सावन ऋतु जीवन के सौंदर्य का अनुभव कराती है। इस कथन के आधार पर कविता का रसास्वादन कीजिए।
उत्तर : बसंत ऋतु आते ही हर तरफ फूल महकने लगते हैं। सरसों फूल जाती है और पूरी धरती हरियाली की चादर ओढ़कर खिल उठती है। कली-कली फूल बनकर मुस्कुराने लगती है। जिसके कारण तन-मन भी प्रसन्न हो जाते हैं।

इस ऋतु के आने से खेत, वन, बाग-बगीचे सब हरे-भरे हो जाते हैं, इंद्रधनुष के विभिन्न रंगों के समान भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे फूल खिल उठते हैं। भौरों के दल प्रसन्न होकर फूलों पर मँडराने लगते हैं। काजल लगी कजरारी आँखों में सपने मुस्कुराने लगते हैं और कंठ से मीठे गीत फूटने लगते हैं। बाग-बगीचों में बहार आने के साथ ही यौवन भी अँगड़ाइयाँ लेने लगता है। मधुर-मस्त बयार चलने के कारण सबके तन-मन प्रसन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार मनभावन सावन आने पर बादल घिर-घिरकर गरजने लगते हैं, बिजली चमकने लगती है और पुरवाई चलने लगती है। मेघ रिमझिम-रिमझिम करके बरसते रहते हैं। मानो प्यार बरसाकर हृदय का तार-तार रँग रहे हों। हर व्यक्ति का मन गुलाब की तरह खिल जाता है। दादुर, मोर और पपीहे बोलकर सबके हृदय को प्रफुल्लित करते रहते हैं। अँधेरी रात में जुगनू जगमग-जगमग करते हुए इधर से उधर डोलकर सबका मन लुभाते हैं। लताएँ और बेलें सब फूल जाती हैं। डाल-डाल महक उठती है। सरोवर और सरिताएँ जल से भरकर उमड़ पड़ती हैं। सभी मनुष्यों के हृदय आनंदित हो उठते हैं।

(साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान)

५. (अ) लोकगीतों की दो विशेषताएँ :
उत्तर : (1) लोकगीतों में गेयता तत्त्व प्रमुख होता है।
(2) लोकगीत मुख्यतः जनसाधारण के त्योहारों से संबंधित होते हैं।

(आ) लोकगीतों के दो प्रकार :
उत्तर : (1) कजरी
(2) सोहर

६ निम्नलिखित शब्द समूहों के लिए कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर शब्दसमूह के सामने लिखिए : (शब्द : पुरस्कार, मितव्ययी, शिष्टाचार, अखाद्य, अमूल्य, प्रणाम, अहंकार, हर्ष, गगनचुंबी, शोक, प्रवचन, अवैध, क्षमाप्रार्थी, मनोहर, अदृश्य)
(१) मन का गर्व - अहंकार

(२) आंतरिक प्रसन्नता - हर्ष

(३) जिस वस्तु का मूल्य आँका न जा सके - अमूल्य

(४) धार्मिक विषयों पर दिया जाने वाला व्याख्यान - प्रवचन

(५) किसी अच्छे कार्य से प्रसन्न होकर दी जाने वाली धनराशि - पुरस्कार

(६) प्रिय व्यक्ति की मृत्यु पर प्रकट किया जाने वाला दुख - शोक

(७) बड़ों के प्रति किया जाने वाला अभिवादन - प्रणाम

(८) कम व्यय करने वाला - मितव्ययी

(९) आकाश को चूमने वाला - गगनचुंबी

(१०) जो विधि या कानून के विरुद्ध हो - अवैध

(११) क्षमा के लिए प्रार्थना करने वाला - क्षमाप्रार्थी

(१२) सभ्य पुरुषों का आचरण - शिष्टाचार

(१३) मन को हरने वाला - मनोहर

(१४) जो दिखाई न दे - अदृश्य।

(१५) जो खाने योग्य न हो - अखाद्य।